अंडे – एक यूनानी कहानी

अलीकी

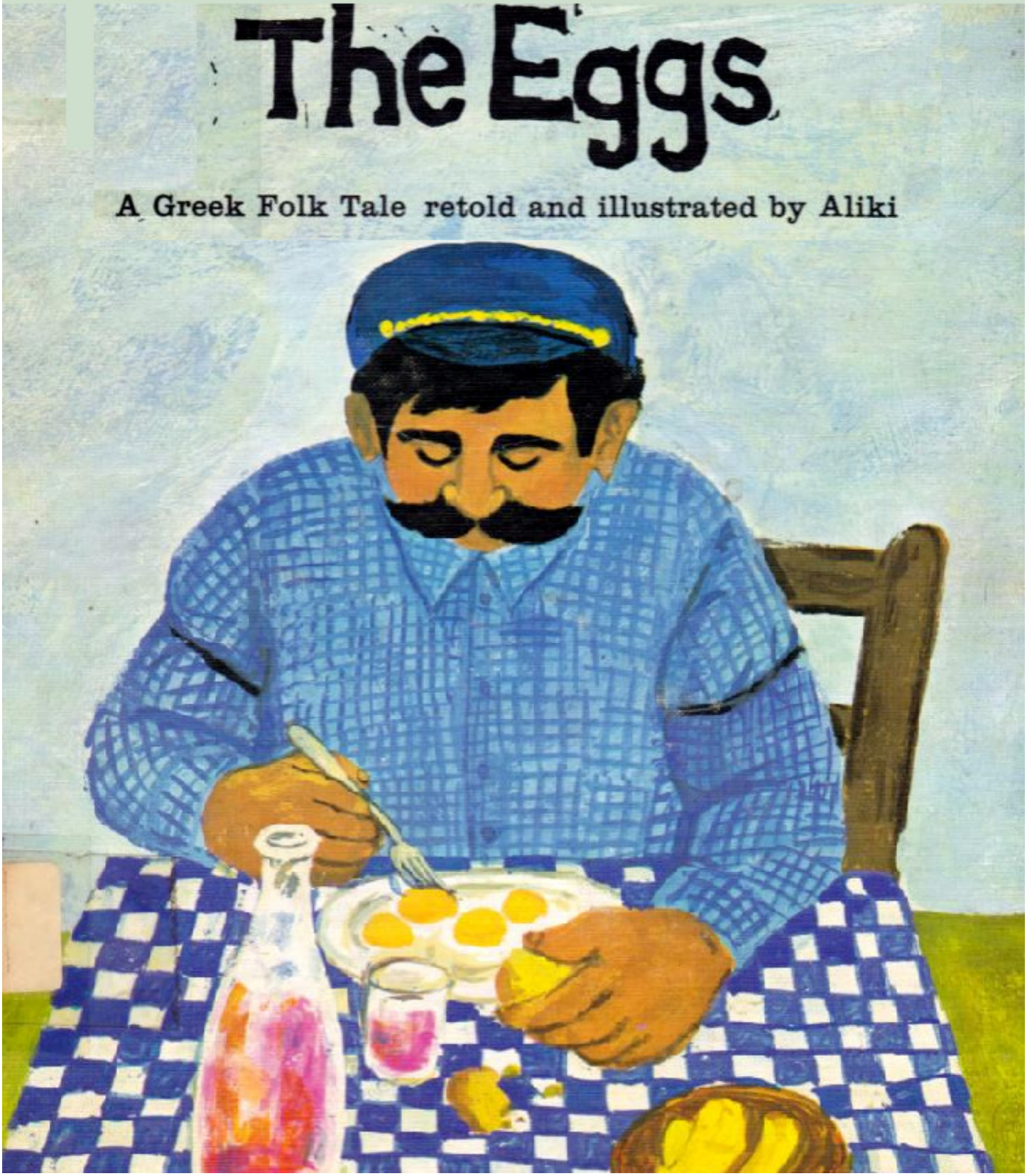

अंडे – एक यूनानी कहानी

अलीकी, हिंदी: विदूषक

The Eggs

A Greek Folk Tale retold and illustrated by

ALIKI

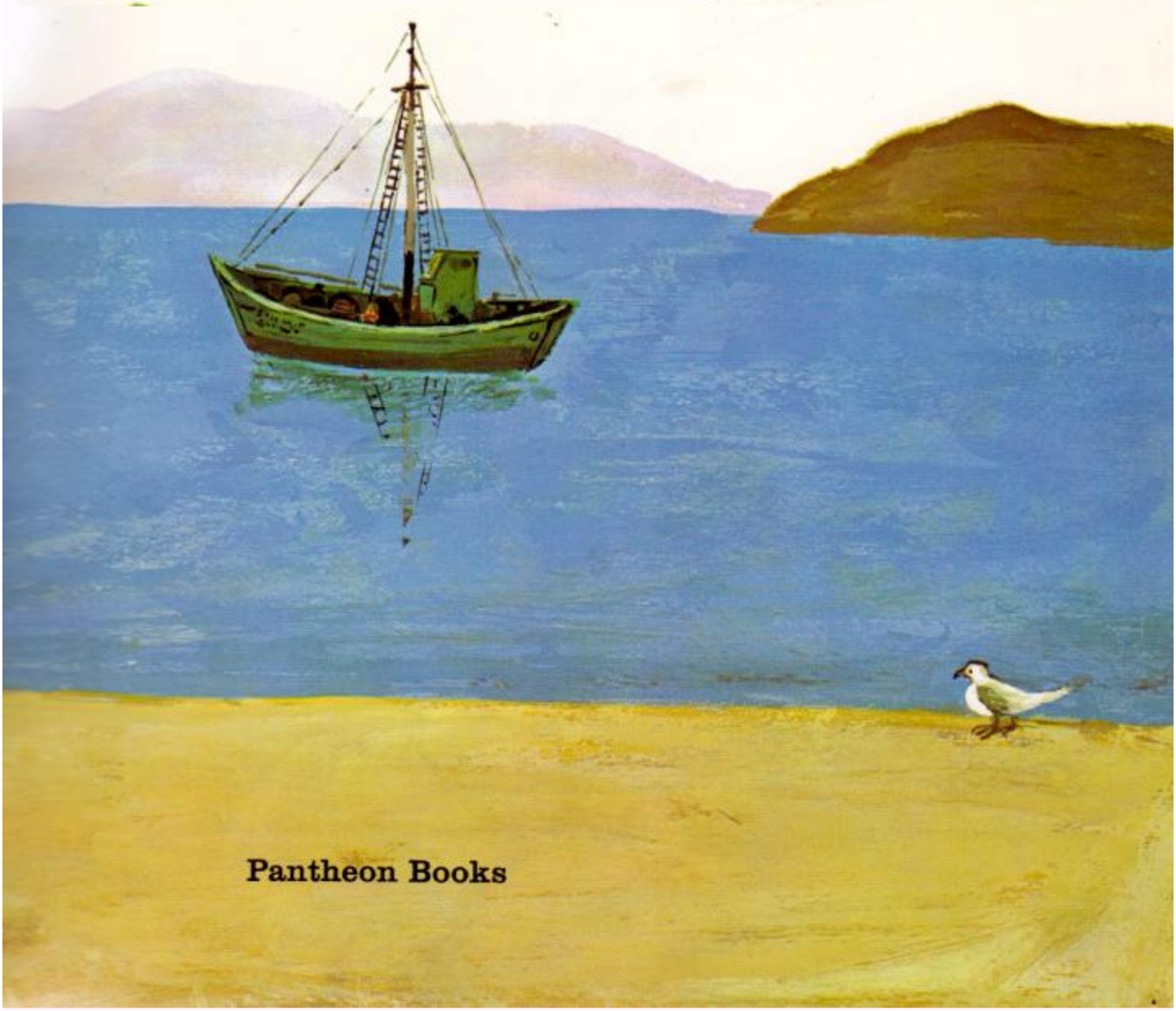

Pantheon Books

ΣΤΑΥΡΟΥΛΑ
ΓΥΘΕΙΟΥ
ΘΑΝΤΣ

एक जहाज़ का कप्तान था. उसकी सबसे महंगी चीज़, उसकी नाव थी.

जब कप्तान समुद्र में नहीं होता, तो वो अपनी नाव की मरम्मत करता और उसे अच्छी तरह पेंट करता.

तब उसकी पत्नी सिर हिलाकर कहती, “भगवान करे कि इस नाव को किसी की बुरी नज़र न लगे!”

कप्तान की ज़िन्दगी आसान नहीं थी.

अक्सर समुद्र में तूफ़ान आते, ऊंची-ऊंची लहरें उठतीं. उसे परिवार से दूर बहुत दिन गुज़ारने पड़ते. पर फिर भी समुद्र में बिताया समय उसके लिए सबसे सुखद होता.

कप्तान को आसपास के सारे बंदरगाह, अच्छी तरह पता थे. वो अपनी नाव में मछलियाँ, बीन्स और जैतून लाद कर अलग-अलग बंदगाहों पर लेकर जाता था.

एक बार जब बंदरगाह पर मजदूर नाव से माल उतार रहे थे तो कप्तान उन्हें बताकर खाना खाने गया.

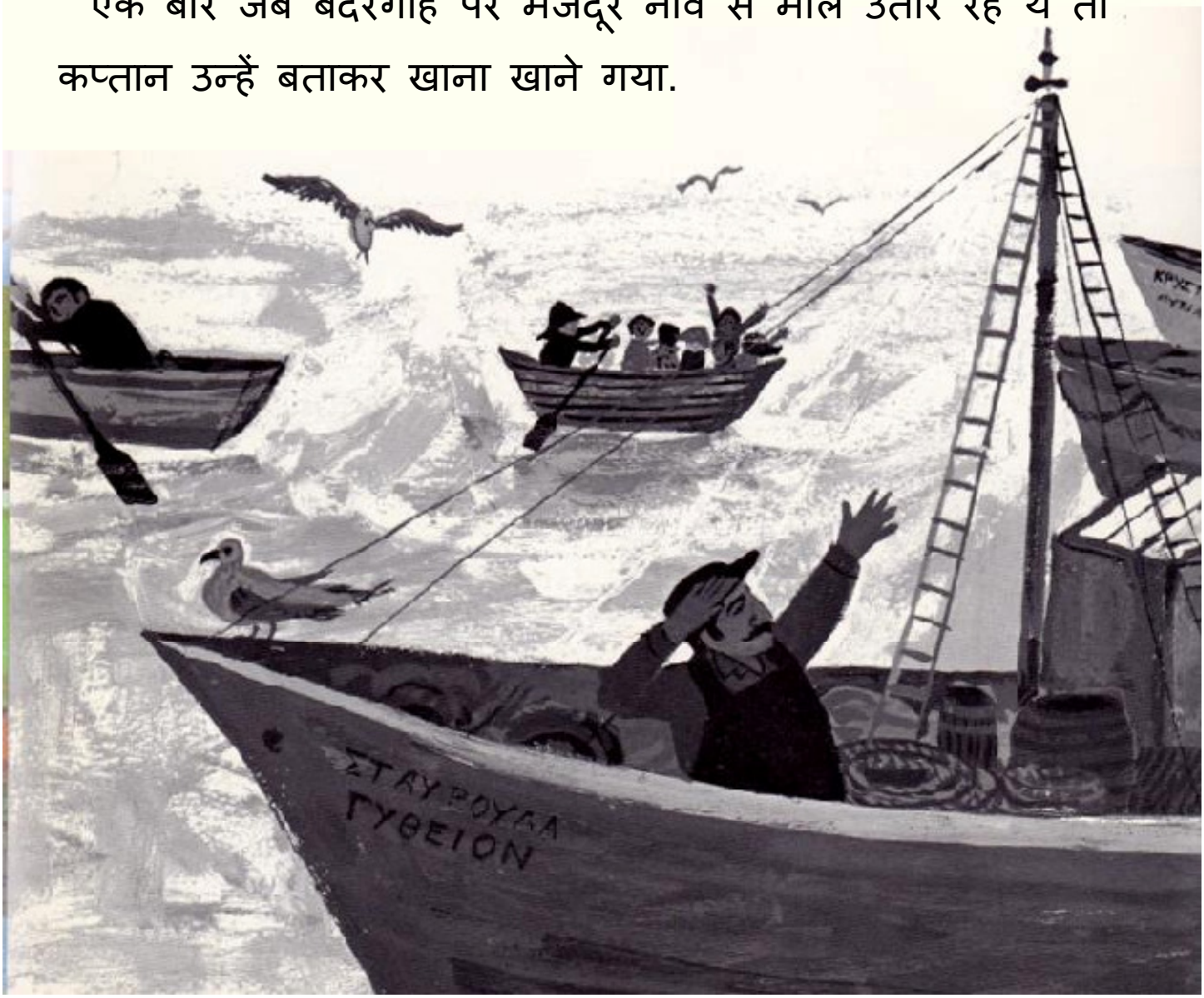

ΦΙΞ
ΚΑΝΕΙ ΚΑΛΟ

उसे बंदरगाह के पास ही एक सराए दिखी और वो उसके अन्दर गया.

“नमस्ते,” उसने कहा, “क्या मुझे कुछ खाने को मिलेगा?”

“अभी खाने को कुछ भी नहीं है,” सराए के मालिक ने जवाब दिया. “हमारा सारा खाना ख़त्म हो गया है. मैंने अभी लड़के को खाना लाने के लिए भेजा है.”

“कोई बात नहीं, मैं कहीं और खा लूँगा,” कप्तान को जोर की भूख लगी थी और वो कहीं और जाने के लिए मुड़ा.

“रुकिए!” सराए के मालिक ने कहा. “मैं अभी चार अण्डों का आमलेट बना रहा हूँ. क्या आप उन्हें खाना पसंद करेंगे?”

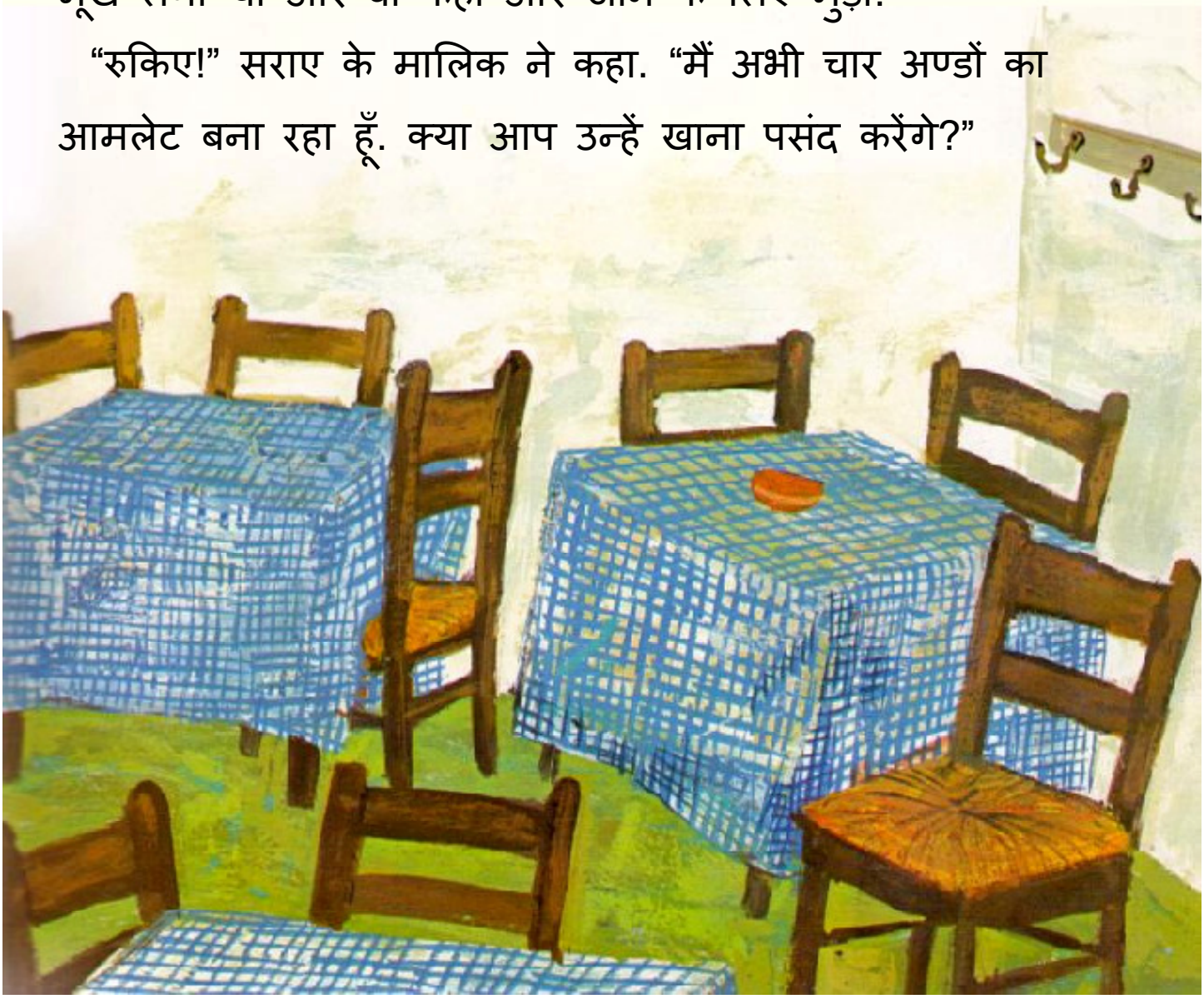

“चार अण्डों के आमलेट से तो मेरा पेट पूरी तरह भर जायेगा,” कप्तान ने उत्तर दिया और फिर वो एक कुर्सी पर बैठ गया.

वो खाना ख़त्म ही कर रहा था कि तभी उसका एक नाविक दौड़ा हुआ सराए में आया.

“जल्दी करो कप्तान!” वो जोर से चिल्लाया. “बहुत भयानक तूफ़ान आने वाला है. हमें जल्दी ही निकल चलना चाहिए.”

वे लोग इतनी जल्दबाजी में वहां से निकले, कि कप्तान अण्डों की कीमत चुकाना भूल गया.

भाग्यवश, वो तूफ़ान से बच गए और तेज़ हवाएं नाव की पाल को कोई नुकसान नहीं पहुंचा पायीं.

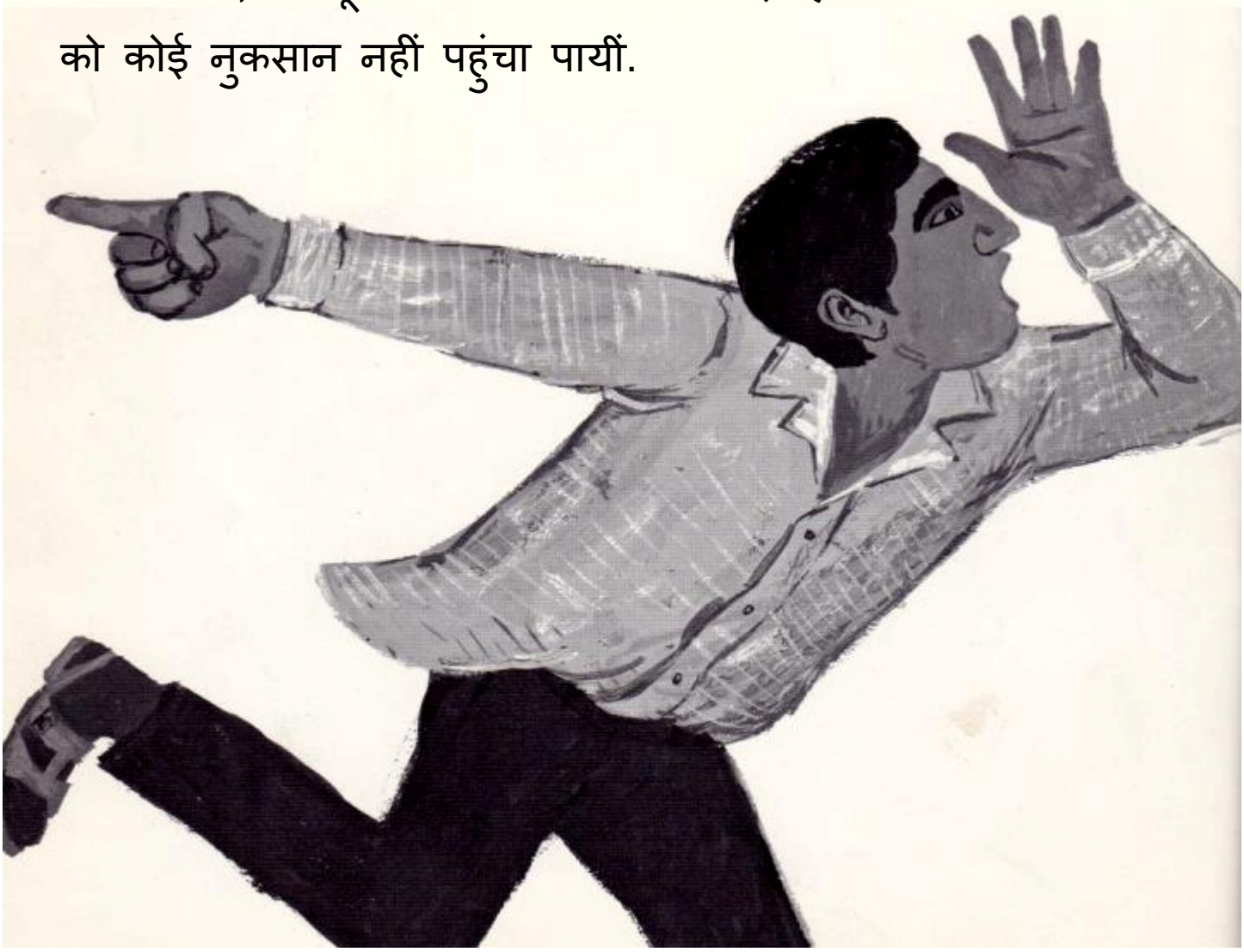

ΤΣΙΠΟΥΡΕΣ
ΜΠΑΡΜΠΟΥΝΙΑ
ΑΡΝΙ
ΜΟΣΧΑΡΙ
ΚΑΦΕΣ

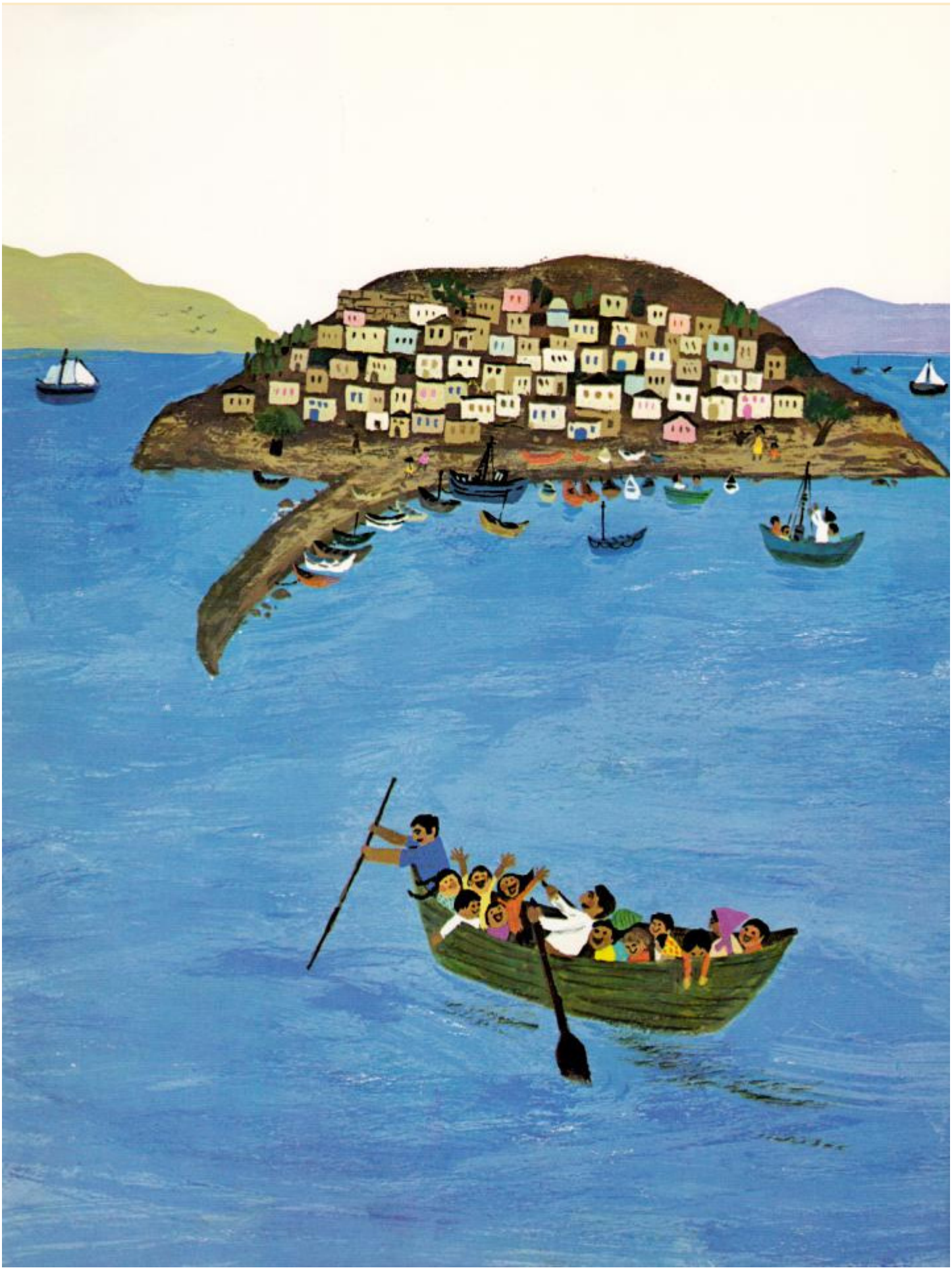

समय बीतता गया. कप्तान एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह पर माल लाद कर ले जाता रहा.

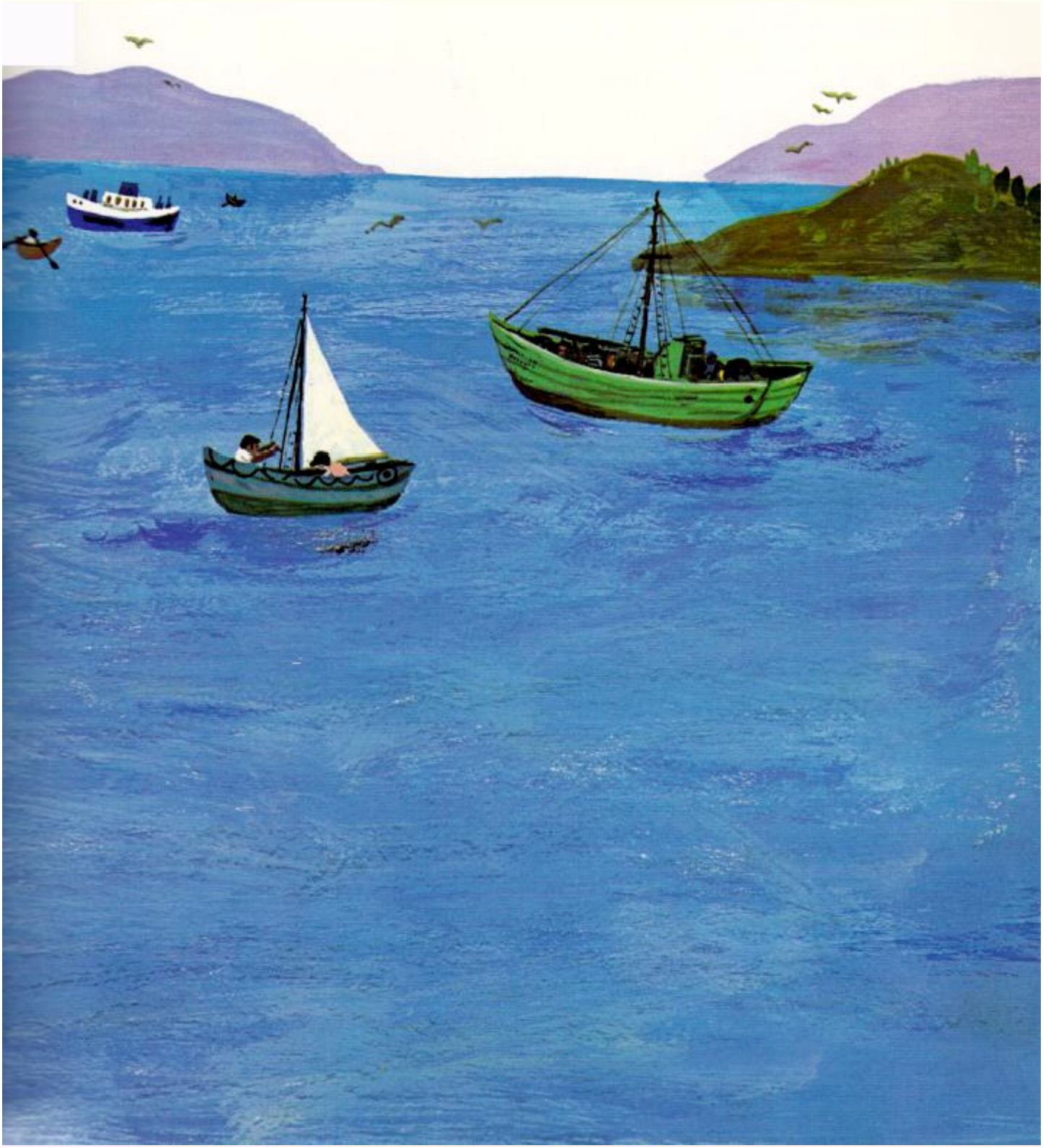

फिर एक लम्बे अरसे - छह साल के बाद, वो उसी जगह दुबारा पहुंचा जहाँ उसने अंडे खाए थे.

नाव को बाँधने के बाद, कप्तान फिर उसी सराए में गया, क्यूंकि वो अपना पुराना बिल चुकाना भूल गया था.

कप्तान ने, सराए के मालिक का अभिवादन किया और अपने बारे में बताया.

“मैंने जो अंडे छह साल पहले खाए थे, मैं उनकी कीमत चुकाना चाहता हूँ,” उसने कहा.

“ठीक है,” सराए के मालिक ने कहा. “उनके लिए आपको 500 सोने की मुहरें देनी होंगी.”

“क्या! 500 सोने की मुहरें!” कप्तान चिल्लाया. “चार अण्डों के आमलेट के लिए यह तो बहुत ज्यादा कीमत है!”

“मेरे प्यारे कप्तान,” उस चालाक सराए के मालिक ने कहा. “अगर मेरे पास वो चार अंडे होते तो मैं उन्हें एक मुर्गी के नीचे रखता. कुछ दिनों में उनमें से चूजे निकलते. फिर मेरे पास दो मुर्गियां और दो मुर्गे होते. वो बड़े होकर और चूजे पैदा करते और छह साल में मेरे पास एक चिकन-फार्म होता. उससे मैं बहुत अमीर बन जाता.”

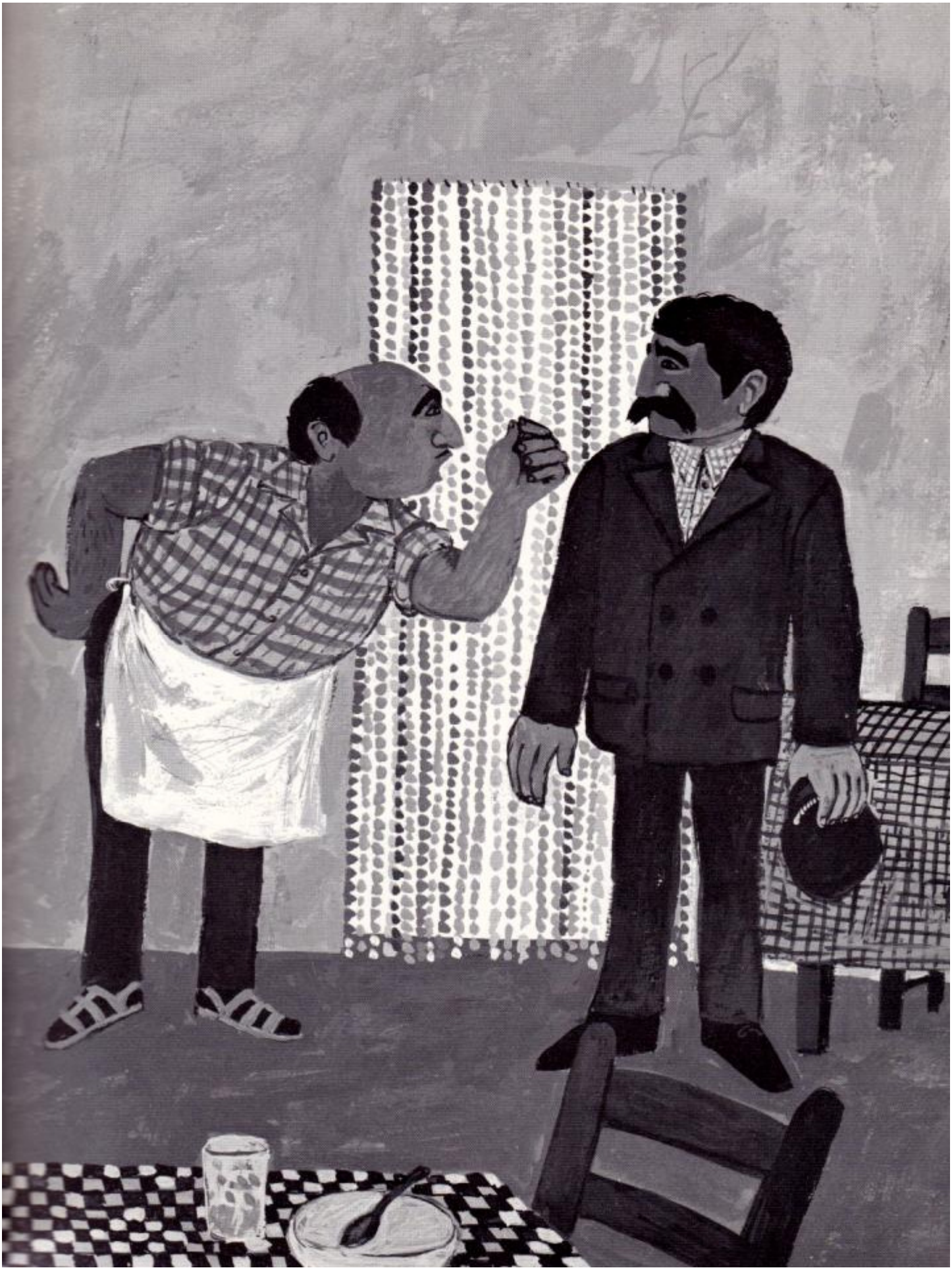

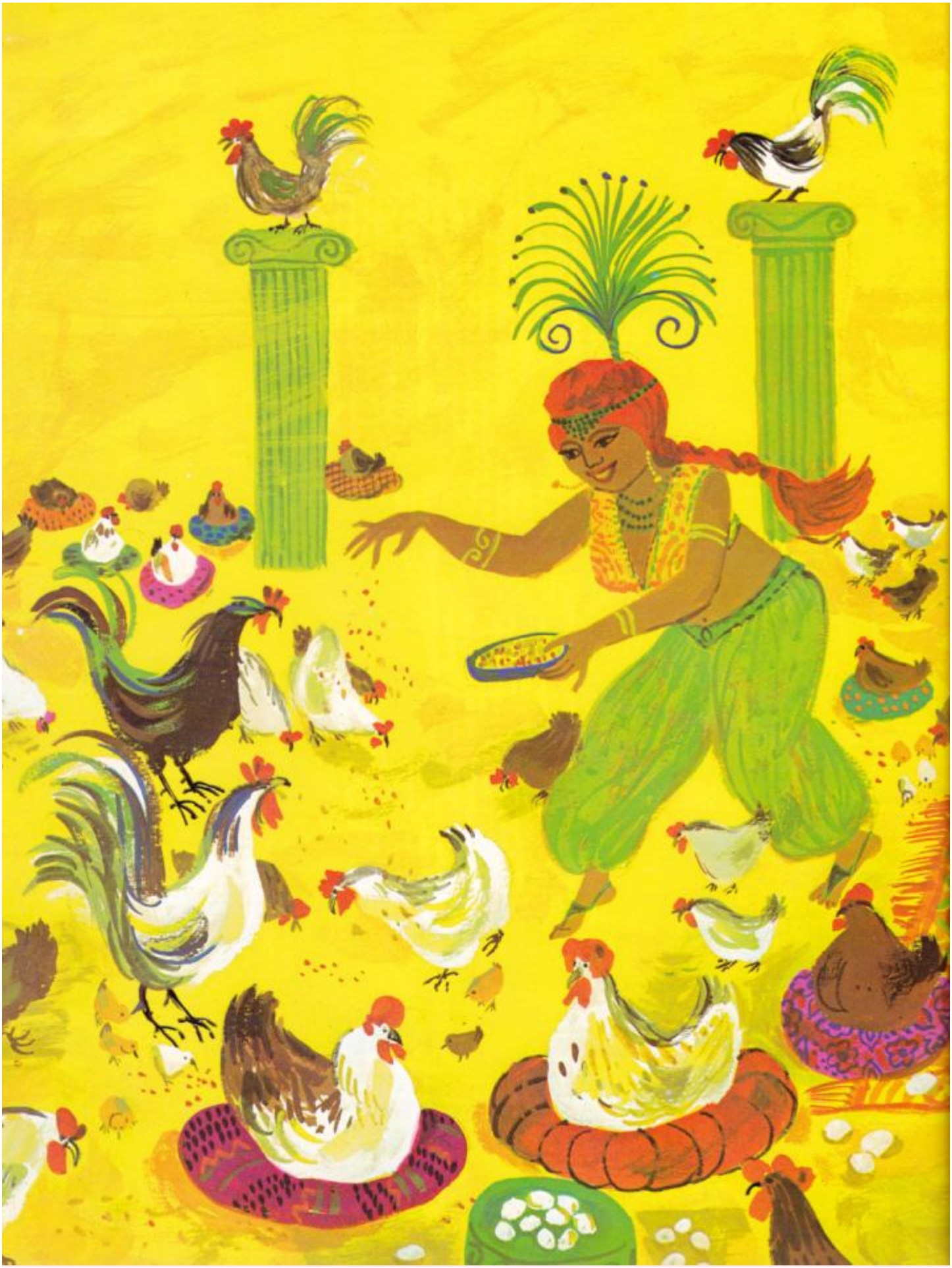

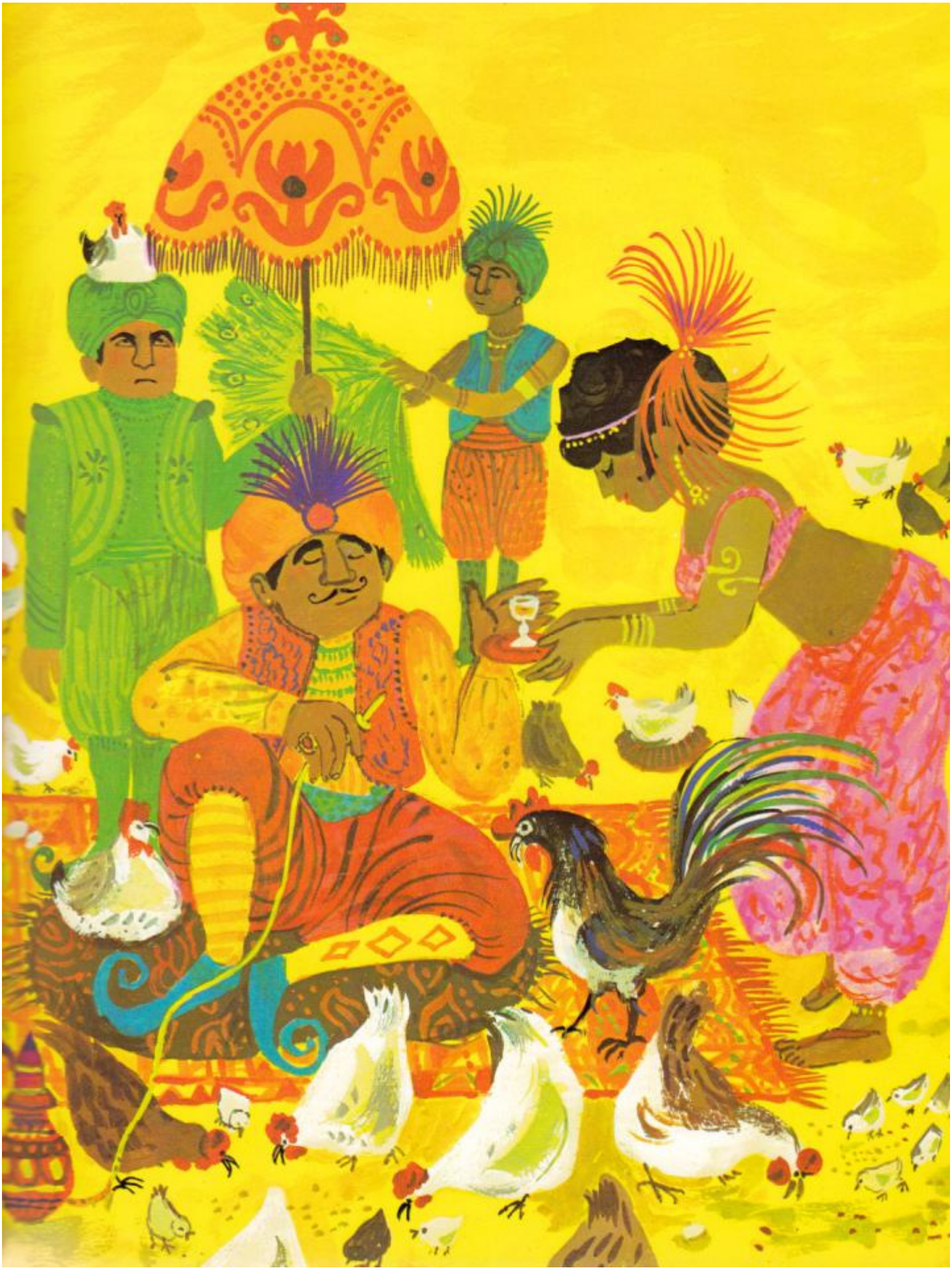

“तुम मेरा बकाया पैसा दो नहीं तो मैं तुम्हे कचेहरी ले जाऊँगा.” सराए के मालिक ने धमकी दी.

यह सुनकर बेचारा कप्तान बहुत दुखी हुआ. अगर उसे इतनी कीमत चुकानी पड़ती, तो फिर नाव के साथ-साथ, उसका पूरा घर-बार भी बिक जाता. फिर वो पूरी ज़िन्दगी एक भिखारी की ज़िन्दगी जीने को मजबूर होता.

पर सराए के मालिक ने, कप्तान की कोई दलील नहीं सुनी.

मैं कल तुमसे कचेहरी मैं मिलूंगा,” उसने चिल्लाते हुए कहा. “फिर हम देखेंगे कि जज क्या कहता है.”

उसके बाद परेशान होकर कप्तान सड़क पर ऊपर-नीचे टहलने लगा. चार अण्डों के बदौलत उसकी नाव, घर-बार, पूरी हस्ती ख़त्म हो जाएगी, यह सोचकर उसका दिमाग घूमने लगा.

तभी वो एक शराब खाने के पास से गुज़रा. उसने वहां अन्दर जाकर समस्या के बारे में सोचने की ठानी.

भीड़ से भरे कमरे में, उसने अपने लिए एक कॉफ़ी का आर्डर दिया.

जब वो गहरे सोच में कॉफ़ी की चुस्की ले रहा था, तभी उसे किसी की आवाज़ सुनाई दी.

“क्या बात है दोस्त? तुम बहुत परेशान लग रहे हो.”

जब कप्तान ने सिर उठा कर देखा तो उसे पास में एक दोस्ताना किस्म का आदमी बैठा दिखाई दिया. उसने ही वो सवाल पूछा था.

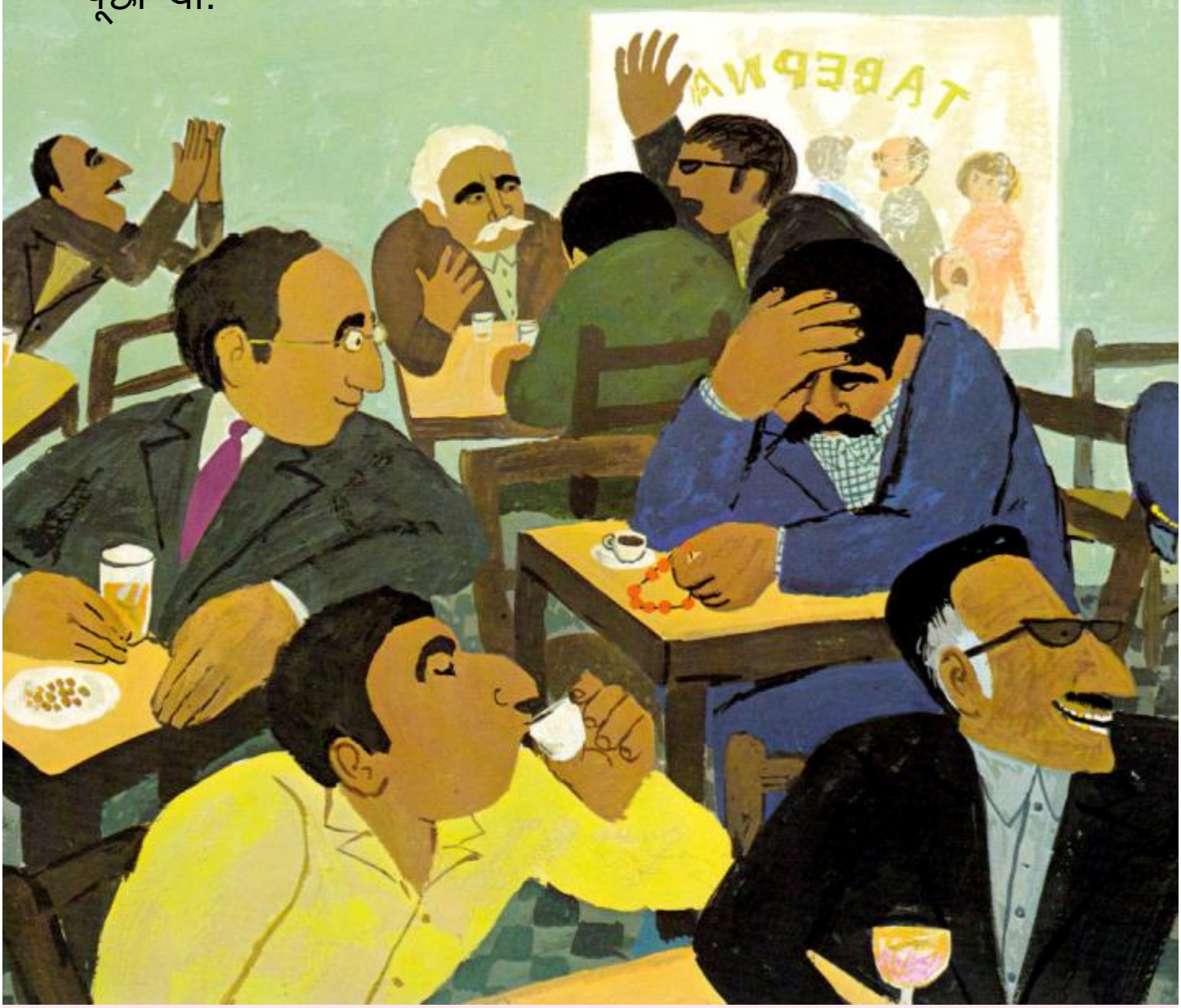

दुखी कप्तान ने अपनी पूरी रामकहानी, उस आदमी को सुनायी.

“तुमने सही आदमी को अपनी व्यथा सुनायी है,” उस अजनबी ने कहा. “में पेशे से एक वकील हूँ. अब मुझे एक गिलास वाइन खरीदकर दो, और फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा. मैं वादा करता हूँ, कल तुम्हारी नाव नहीं बिकेगी.”

अगले दिन कप्तान सुबह सात बजे ही कचेहरी पहुँच गया.

कोर्ट-कचेहरी में उसे सराए का मालिक तो दिखाई दिया, पर वकील बिलकुल नदारद था.

कप्तान चुपचाप उसका इंतज़ार करता रहा.

एक घंटा बीता. फिर एक और, एक और.

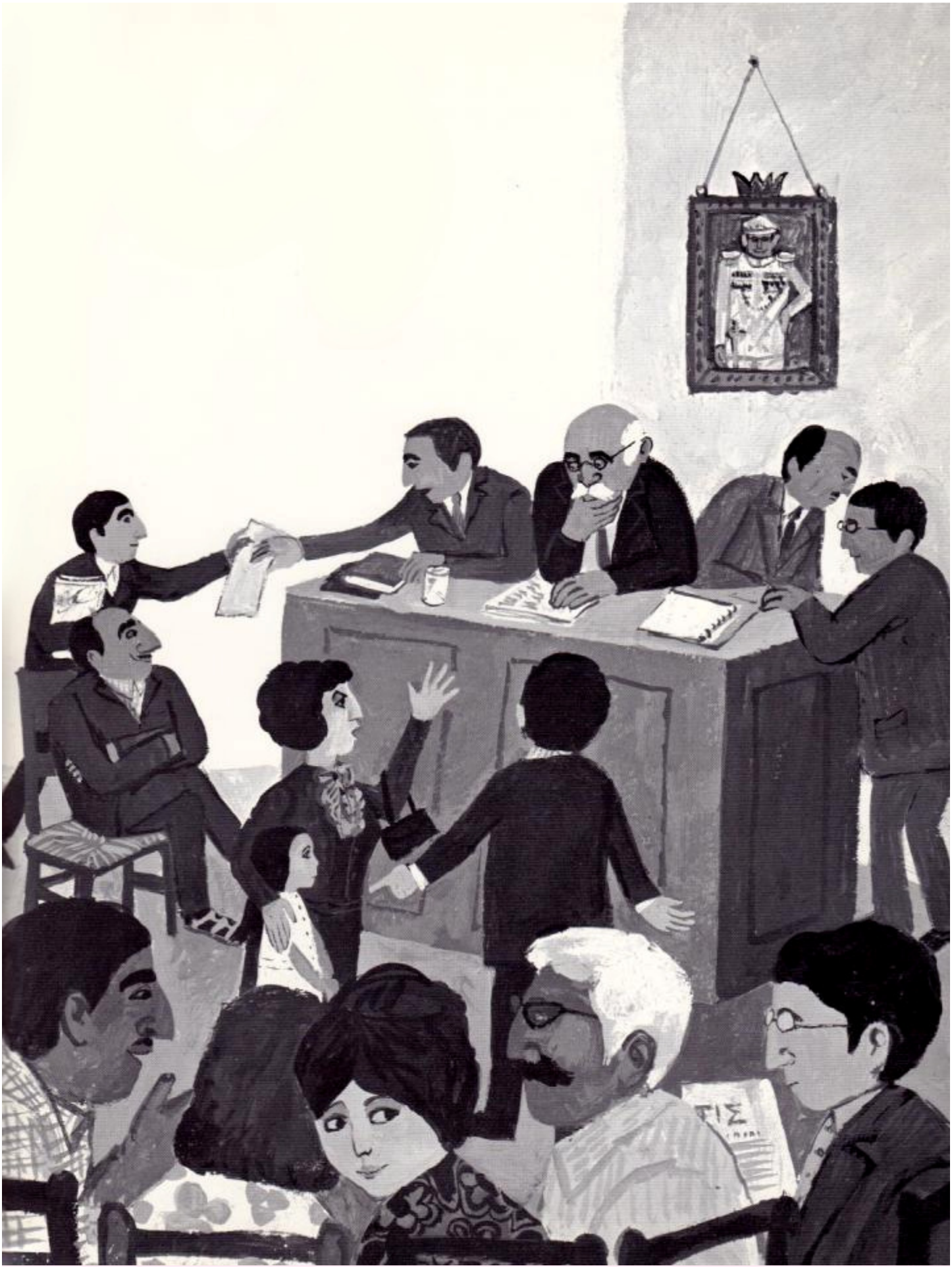

अंत में कोर्ट-कचेहरी में आये जितने लोग थे वे सब एक के बाद एक करके चले गए.

ग्यारह बज गए, पर वकील अभी भी नहीं आया.

फिर तो जज साहिब ने भी धैर्य खोकर बेताब हो बैठे.

“देखो मैं दोपहर 12 बजे तक इंतज़ार करूंगा,” जज साहिब ने कहा. “उसके बाद मैं और नहीं रुकूंगा.”

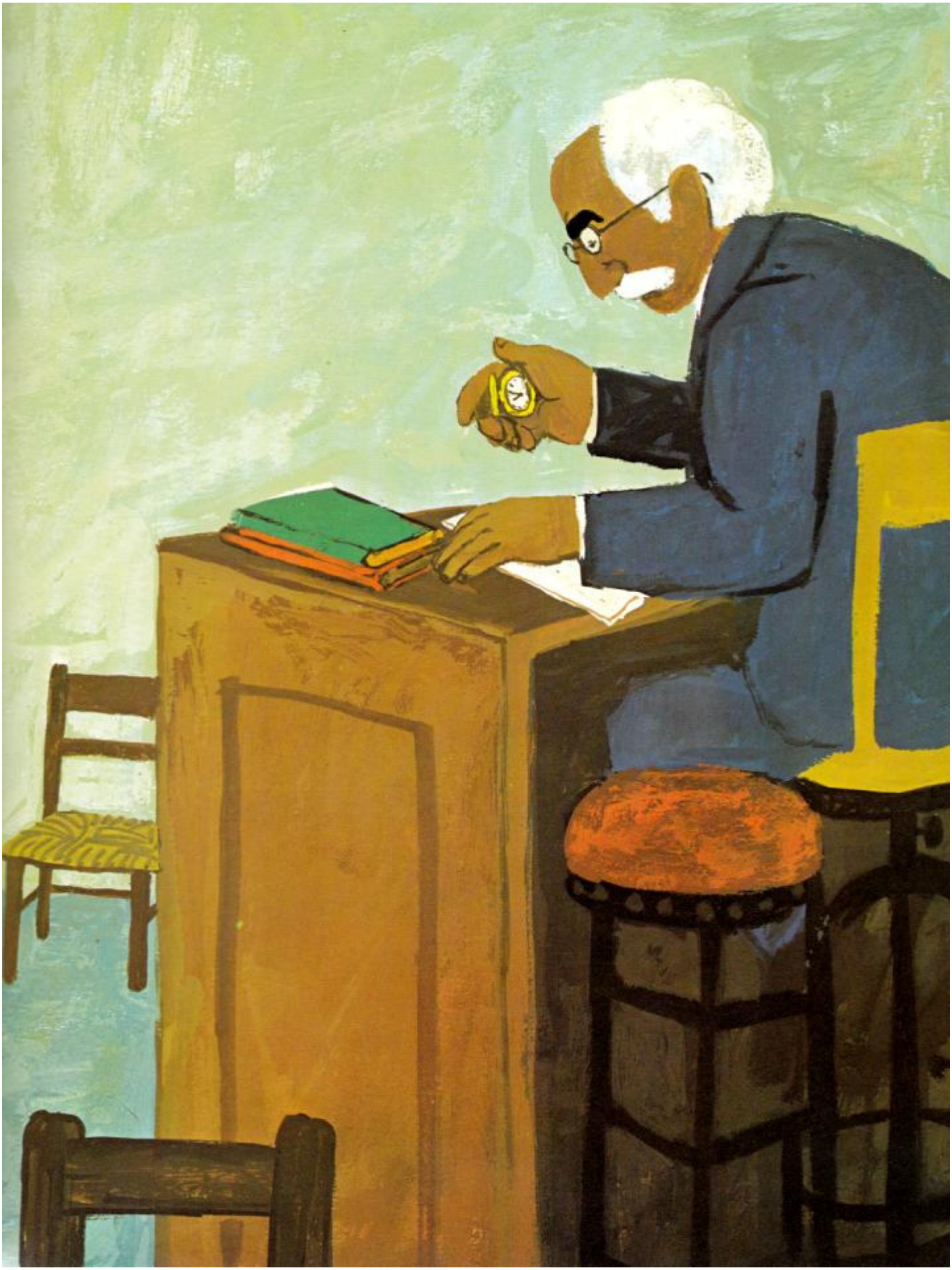

ठीक बारह बजने में पांच मिनट पर, वो वकील हाज़िर हुआ.

“नमस्कार,” वकील ने नम्रता से कहा.

“तुम इतनी देर कहाँ थे?” जज ने वकील से पूछा. “हम लोग यहाँ सुबह सात बजे तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं और अब हमारे पेट में चूहे कूद रहे हैं.”

“जज साहिब, देरी से आने के लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ. पर जब आप मेरी कहानी सुनेंगे तो आपको मेरी देरी का कारण समझ में आ जायेगा,” वकील ने अपनी सफाई में कहा.

“कल मेरे मित्र ने मुझे एक थैले में बीन्स दिए. क्यूंकि मेरी पत्नी को बीन्स बहुत पसंद हैं, इसलिए उसने वो बीन्स पकाए. हमने उन्हें दोपहर के खाने में खाया. फिर उन्हें रात के खाने में भी खाया. आज सुबह हमने नाश्ते में भी बीन्स खाए. पर फिर भी कुछ बीन्स बच गए. फिर हमने उन बचे हुए बीन्स को ज़मीन में बो दिया. बहुत अच्छा होता अगर आपने हमें देखा होता!

“तुमने उबाले बीन्स को ज़मीन में बोया?” सराए के मालिक ने हँसते हुए कहा. “उबले बीन्स में भला कैसे अंकुर फूटेगा, हमने तो यह कभी सुना नहीं?”

तब वकील ने सराए के मालिक की ओर देख कर कहा, “कभी किसी ने सुना है - जिन अण्डों का आमलेट बन चुका हो, क्या उनमें से कभी चूजे बाहर निकल सकते हैं!”

सराए के मालिक को अपनी गलती का तुरंत एहसास हुआ.

जज साहिब ने कप्तान से चार अण्डों की कीमत चुकाने को कहा.

कप्तान ने ख़ुशी-ख़ुशी अण्डों की कीमत चुकाई. क्यूंकि कप्तान बहुत भला आदमी था इसलिए उसने सराए के मालिक को कुछ पैसे और दिए

“यह पैसे मेरे दोस्त के लिए हैं. जब उसका गिलास खाली हो, तो वो इन पैसों से कुछ और वाइन खरीद सकता है,” कप्तान ने कहा.

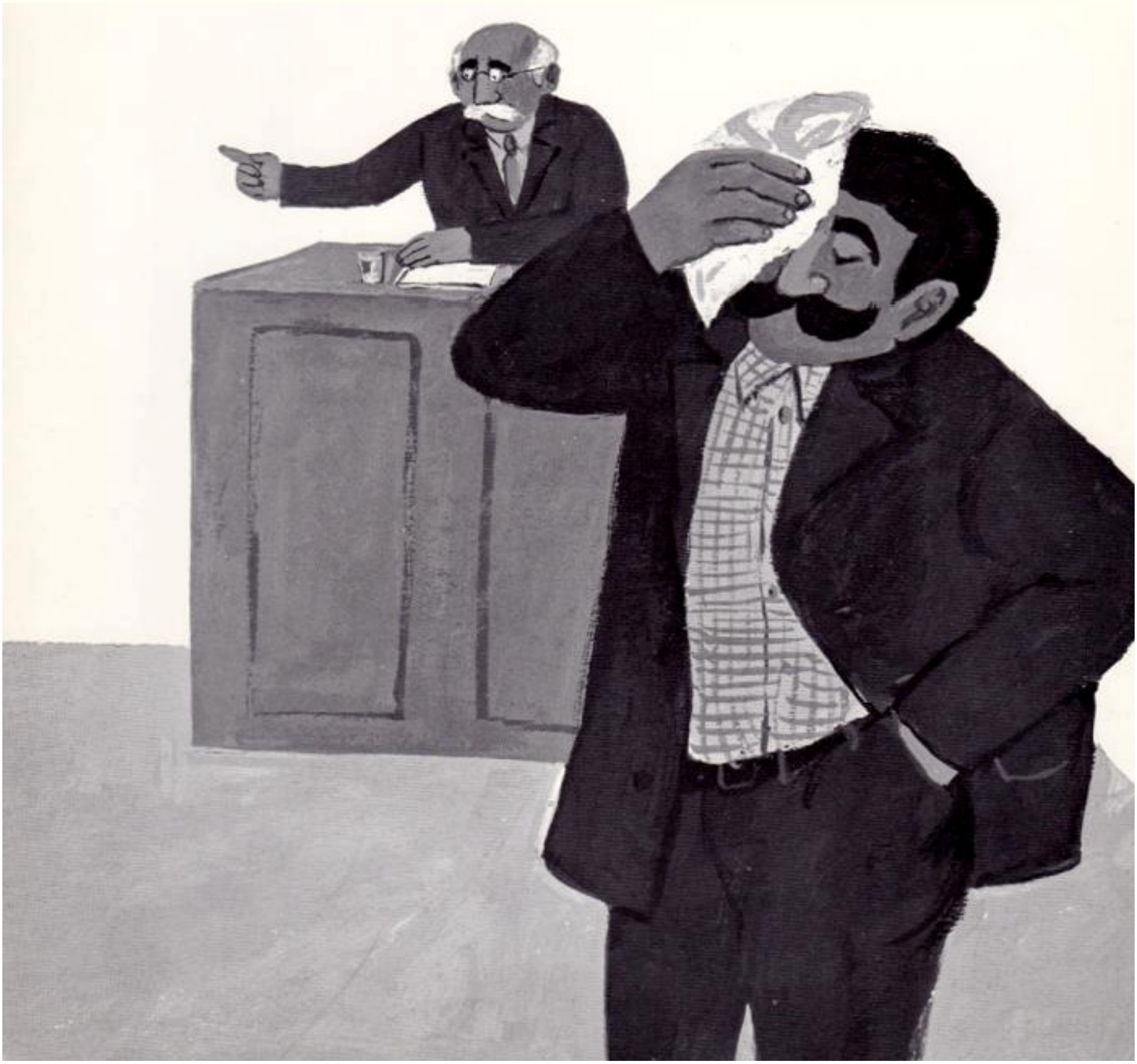

उसके बाद कप्तान ख़ुशी-ख़ुशी अपनी कीमती नाव में सवार होकर अपने घर गया.